



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (1)  
PART II—Section 3—Sub-section (1)

प्रधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 188]

No. 188]

नई दिल्ली, बुधवार, मई 19, 1983/वैशाख 29, 1905

NEW DELHI, THURSDAY, MAY 19, 1983/VAISAKHA 29, 1905

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate  
compilation

वित्त मंत्रालय  
(राजस्व विभाग)  
अधिसूचनाएं

नई दिल्ली, 19 मई, 1983

सं० 149/83-सीमाशुल्क

सां०कां०मि० 430 (अ).—केन्द्रीय सरकार, सीमाशुल्क अधिनियम 1962 (1962 का 52) की धारा 25 की उपधारा (1) द्वारा प्रस्तुत शक्तियों का प्रयोग करते हुए, अपना यह समाधान हो जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना आवश्यक है, यह निदेश देती है कि भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की उन प्रत्येक अधिसूचनाओं को, जो इससे उपाबद्ध सारणी के स्तंभ (2) में विनिर्दिष्ट हैं, उक्त सारणी के स्तंभ (3) में की तत्स्थानी प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट रीति से, यथा-स्थिति संशोधित या और संशोधित किया जाएगा।

सारणी

क्रम सं०	अधिसूचना सं० और तारीख	संशोधन
(1)	(2)	(3)

- 34/82 सीमाशुल्क, तारीख उक्त अधिसूचना से उपाबद्ध सारणी 28 फरवरी, 1982 में क्रम सं० 1 के सामने, स्तंभ (3)

1	2	3
		में विद्यमान प्रविष्टि के स्थापन पर निम्न-लिखित प्रविष्टि रखी जाएगी, अर्थात्:— “निम्नलिखित से भिन्न सभी मास, अर्थात्:— (क) कलाई रहित इस्पात की लेपित चावुं। (ख) मोढ़ा या इस्पात की गलबनी कुल चावुं, कुंडली में या अन्यथा।”
2.	40/83 सीमाशुल्क, तारीख 1 मार्च, 1983	उक्त अधिसूचना से उपाबद्ध सारणी में, क्रम सं० 10 और उससे संबंधित प्रविष्टियों का जोड़ किया जाएगा।

[क्र०सं० टी० एल०/48/83-टी० वार० यू०]

MINISTRY OF FINANCE  
(Department of Revenue)

NOTIFICATIONS  
New Delhi, the 19th May, 1983  
No. 149/83—Customs

G.S.R. 430(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 25 of the Customs Act, 1962 (52 of

4. शारीरिक योग्यता और चरित्र तथा पूर्ववृत्त का सत्यापन .--आयोग के अधीन सभी पदों पर भर्ती, सामान्यतया ऐसे मानकों के अनुसार, जो सरकार के अधीन तत्समान प्रस्थिति के पदों के लिए अधिकृत किए जाएं, स्वस्थता का चिकित्सीय प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने के अधीन रहते हुए और सम्बद्ध व्यक्ति के चरित्र और पूर्ववृत्त के सत्यापन के पश्चात् की जाएगी, तथापि पश्चात्पूर्ति जहाँ उन मामलों में शिथिल की जा सकेगी जिनमें आयोग ऐसा शिथिलीकरण आवश्यक समझता है।

5. श्रद्धा निधि .--आयोग के कर्मचारी अपने विकल्प पर, ग्राह्य श्रद्धा निधि और पेंशन तथा उपदान स्कीम या श्रद्धादायी श्रद्धा निधि और उपदान स्कीम के पात्र होंगे। आयोग के वे कर्मचारी जो श्रद्धादायी श्रद्धा निधि के लिए अपना विकल्प देते हैं समय-समय पर यथामंशोधित विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग श्रद्धादायी श्रद्धा निधि नियम, 1956 द्वारा शासित होंगे। सरकार कर्मचारियों को लागू पेंशन और उपदान तथा साधारण श्रद्धा निधि के लिए नियम, आयोग के कर्मचारियों को यथाप्रावश्यक परिवर्तनों सहित लागू होंगे।

6. निवास स्थान का आश्रय .--आयोग के कर्मचारी नई दिल्ली में, ग्राह्य पूल से सरकारी निवास स्थान के आश्रय के लिए उन्ही निबंधनों और शर्तों पर पात्र होंगे जो सरकारी कर्मचारियों को लागू होते हैं।

7. केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य स्कीम में सम्मिलित किया जाता .--आयोग के कर्मचारी, केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य स्कीम प्रसुविधाओं में, ऐसे निबंधनों पर सम्मिलित किए जाएंगे जो सरकार द्वारा इस निमित्त अधिकृत किए जाएं।

8. सेवानिवृत्ति .--समूह ४ के कर्मचारियों से निम्न कर्मचारियों के लिए सेवानिवृत्ति की आयु 58 वर्ष होगी और समूह ४ के कर्मचारियों के लिए 60 वर्ष होगी किन्तु यह उन शर्तों के अधीन रहते हुए होगी जो सरकार द्वारा किसी कर्मचारी की सेवानिवृत्ति के संबंध में उसके द्वारा 55 वर्ष की आयु पूरी कर लेने के पश्चात्, समय-समय पर अधिकृत की जाएं:

परन्तु यह कि विशेष मामलों में आयोग किसी कर्मचारी को, उसके द्वारा 58 वर्ष की आयु पूरी कर लेने के पश्चात् सेवा में, एक बार में एक वर्ष के लिए और कुल दो वर्ष के लिए अर्थात् जब तक ऐसा कर्मचारी 60 वर्ष की आयु पूरी नहीं कर लेता है, बने रहने की अनुज्ञा दे सकेगा।

परन्तु यह और भी कि कर्मचारी उस मास की अंतिम तारीख के अपराह्न में सेवानिवृत्ति होगा जिसमें वह अधिवर्षिता की आयु प्राप्त कर लेता है।

परन्तु यह और भी कि ऐसा कर्मचारी जिसकी जन्म की तारीख किसी मास की पहली तारीख है, यथास्थिति 58 या 60 वर्ष की आयु पूरी कर लेने पर, उस मास के पूर्ववर्ती मास के अंतिम दिन को सेवानिवृत्ति होगा।

परन्तु यह और भी कि उस कर्मचारी के मामले में जिसमें आयोग ने तत्कालीन उपबंधों के अधीन सेवानिवृत्ति की आयु पहले सेही 60 वर्ष नियत कर दी है, उनकी सेवानिवृत्ति की आयु 60 वर्ष होगी।

9. सेवा के अन्य निबंधन और शर्तें .--आयोग के अधिकारियों और कर्मचारियों की सेवा के अन्य निबंधन और शर्तें ऐसी होंगी जो आयोग द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 की धारा 26(1)(ग) के अधीन बनाए गए विनियमों द्वारा अधिकृत की जाएं।

[म० एफ० 10-30/80 डेस्क (यू)]

## MINISTRY OF EDUCATION AND CULTURE

(Department of Education)

New Delhi, the 19th May, 1983

### NOTIFICATIONS

**G.S.R. 433 (E).**—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) read with clause (d) of sub-section (2) of section 25 of the University Grants Commission Act, 1956 (3 of 1956), and in supersession of the University Grants Commission (Terms and Conditions of Service of Employees) Rules, 1958, except as respects things done or omitted to be done before such supersession, the Central Government hereby makes the following rules regulating the terms and conditions of service of employees of the University Grants Commission, namely:—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the University Grants Commission (Terms and Conditions of Service of Employees) Rules, 1983.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definition.—In these rules, unless the context otherwise requires—(i) “Commission” means the University Grants Commission established under section 4 of the University Grants Commission Act, 1956 (3 of 1956).

(ii) “Government” means the Central Government.

3. Appointment of Staff.—The Commission may appoint such number of officers and other employees as may be determined by it (subject to the general financial limits in the budget accepted by the Government in the Ministry of Education):

Provided that no post, the maximum remuneration of which exceeds Rs. 2250/- per mensem shall be created by the Commission without the prior sanction of the Government;

Provided further that appointments to temporary and short-term posts sanctioned by the Government under the afore-said proviso shall be made by the Commission for a period of six months or for the duration for which the post is sanctioned, whichever is less.



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)  
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 188]  
No. 188]

नई दिल्ली, बुधवार, मई 19, 1983/वैशाख 29, 1905  
NEW DELHI, THURSDAY, MAY 19, 1983/VAISAKHA 29, 1905

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate  
compilation

वित्त मंत्रालय  
(राजस्व विभाग)  
अधिसूचनाएं

नई दिल्ली, 19 मई, 1983

सं० 149/83-सीमाशुल्क

सा०का०वि० 430 (अ).—केन्द्रीय सरकार, सीमाशुल्क अधिनियम 1962 (1962 का 52) की धारा 25 की उपधारा (1) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, अपना यह समाधान हो जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना आवश्यक है, यह निवेदन देती है कि भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की उन प्रत्येक अधिसूचनाओं को, जो इससे उपाखण्ड सारणी के स्तंभ (2) में विनिर्दिष्ट हैं, उक्त सारणी के स्तंभ (3) में की तत्त्वानी प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट रीति से, यथा-स्थिति संशोधित या और संशोधित किया जाएगा।

सारणी

क्रम सं०	अधिसूचना सं०	कीर	तारीख	संशोधन
(1)	(2)	(3)		
1.	34/82 सीमाशुल्क, तारीख उक्त अधिसूचना से उपाखण्ड सारणी 28 फरवरी, 1982	में क्रम सं० 1 के सामने, स्तंभ (3)		

1	2	3
		में विद्यमान प्रविष्टि के स्थानपर निम्न-लिखित प्रविष्टि रखी जाएगी, अर्थात्:— “निम्नलिखित से निम्न सभी मामल, अर्थात्:— (क) कलाई रक्षित इस्पात की लेपित बायटें। (ख) शोला या इस्पात की गलबनी कुच बायटें, कुंडली में या गलबनी।”
2.	40/83 सीमाशुल्क, तारीख 1 मार्च, 1983	उक्त अधिसूचना से उपाखण्ड सारणी में, क्रम सं० 10 कीर उससे संबंधित प्रविष्टियों का लोप किया जाएगा।

[फा०सं० डी० एत०/48/83-टी० नार० वृ०]

MINISTRY OF FINANCE  
(Department of Revenue)

NOTIFICATIONS  
New Delhi, the 19th May, 1983  
No. 149/83—Customs

G.S.R. 430(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 25 of the Customs Act, 1962 (52 of

1962), the Central Government, being satisfied that it is necessary in the public interest so to do, hereby directs that each of the notifications of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue) specified in column (2) of the Table hereto annexed shall be amended or further amended as the case may be, in the manner specified in the corresponding entry in column (3) of the said Table.

TABLE

Sl. No.	Notification No. and date	Amendment
(1)	(2)	(3)
1.	34/82—Customs, dated the 28th February, 1982.	In the Table annexed to the said notification, against Sl. No. 1, in column (3) for the existing entry, the following entry shall be substituted, namely:— "All goods other than the following, namely:— (a) tin-free coated steel sheets, and (b) galvanised sheets of iron or steel, in coils or otherwise.";
2.	40/83—Customs, dated the 1st March, 1983	In the Table annexed to the said notification, Sl. No. 10 and the entries relating thereto shall be omitted.

[F. No. TS/48/83—TRU]

## सं० 150/83-सीमाशुल्क

सां०का०वि० 431(अ).—केन्द्रीय सरकार, सीमाशुल्क अधिनियम 1962 (1962 का 52) की धारा 25 की उपधारा (1) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए अपना यह समाधान हो जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना आवश्यक है सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (1975 का 51) की पहली अनुसूची के सीधे सं० 73.12 के अन्तर्गत आने वाले लोहे या इस्पात की गैल्वनीकृत हूप और पट्टियों, कुण्डली में या अन्यथा से विषय सभी माल को जब उसका भारत में आयात किया जाए उक्त पट्टी अनुसूची में विनिर्दिष्ट उस पर उद्ब्रह्णीय सीमाशुल्क के उसने भाग से छूट देती है जितना मूल्य के 30 प्रतिशत से अधिक है।

[फा०सं०टी० एस्०/48/83-टी० आर० यू०]

## No. 150/83—Customs

G.S.R. 431(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 25 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962), the Central Government, being satisfied that it is necessary in the public interest so to do, hereby exempts all goods other than galvanised hoops and strips, of iron or steel, in coils or otherwise, falling under Heading No. 73 12 of the First Schedule to the Customs Tariff Act, 1975 (51 of 1975), when imported into India, from so much of that portion of the duty of customs leviable thereon which is specified in the said First Schedule as is in excess of the amount calculated at the rate of 30 per cent. ad valorem.

[F. No. TS/48/83—TRU]

## सं० 151/83-सीमाशुल्क

सां०का०वि० 432(अ).—केन्द्रीय सरकार, सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 25 की उपधारा (1) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, अपना यह समाधान हो जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना आवश्यक है, भारत सरकार के विस्तृत मंत्रालय (राजस्व विभाग) की अधिसूचना सं० 136/83-सीमाशुल्क, तारीख 13 मई, 1983 का निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात्:—

उक्त अधिसूचना से उपाबद्ध सारणी में क्रम सं० 4 और उससे संबंधित प्रविष्टियों के पश्चात् निम्नलिखित अन्तः स्थापित किया जाएगा, अर्थात्:—

(1)	(2)	(3)
"5.	लोहे या इस्पात की सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 14 में या अन्यथा	गैल्वनीकृत पट्टियों, कुण्डली के उपबंधों के अनुसार यथा अवधारित माल के मूल्य का 25 प्रतिशत।
6.	लोहे या इस्पात की सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 14 में या अन्यथा	गैल्वनीकृत रीटें, कुण्डली के उपबंधों के अनुसार यथा अवधारित माल के मूल्य का 25 प्रतिशत"।

[फा०सं०टी० एस्०/48/83-टी० आर० यू०]

जे० श्रीधरन, अवर सचिव

## No. 151/83—Customs

G.S.R. 432 (E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 25 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962), read with sub-section (4) of section 45 of the Finance Act, 1983 (11 of 1983), the Central Government, being satisfied that it is necessary in the public interest so to do, hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue) No. 136/83—Customs, dated the 13th May, 1983, namely:—

In the Table annexed to the said notification, after Sl. No. 4 and the entries relating thereto, the following shall be namely:—

(1)	(2)	(3)
"5.	Galvanised hoops and strips, of iron or steel, in coils or otherwise.	25 per cent. of the value of the goods as determined in accordance with the provisions of section 14 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962).
6.	Galvanised sheets of iron or steel, in coils or otherwise.	25 per cent. of the value of the goods as determined in accordance with the provisions of section 14 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962)."'

[F. No. TS/48/83—TRU]

J. SRIDHARAN, Under Secy.